

संगोष्ठी में रोहतासगढ़ के इतिहास और लोक कथाओं में समाहित इसके स्थान को बताया

रांची | एक्सआईएसएस में 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन', आदिवासी साहित्य निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सोमवार को फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस. जे. ऑडिटोरियम में एक्सआईएसएस के ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के डॉ. केएस सिंह जेनन्यू दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता मैरी गिरार्ड के साथ मिलकर सेमिनार में आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज के लिए इनकी संस्कृति और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई। संस्थान के निदेशक डॉ. जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने सबका स्वागत किया

एक्सआईएसएस : आदिवासी साहित्य निर्माण पर संगोष्ठी



सेमिनार के दौरान रोहतासगढ़ के इतिहास और लोक कथाओं में समाहित इसके स्थान को बताया गया। साहित्य, शोध, कला, फिल्म निर्माण और अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने आदिवासी साहित्य का विकास, समकालीन संदर्भों में इसका अनुकूलन और सांस्कृतिक पहचान और लचीलेपन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका चर्चा की। इनमें सिद्धो-कान्हो विश्वविद्यालय, दुमका की पूर्व कुलपति डॉ. सोना झारिया मिंज, फादर निकोलस बारला, गुंजल इकिर मुंडा, डॉ. अभय सागर मिंज, दीपक बाड़ा, सीबीसीआई नई दिल्ली के सचिव डॉ. नारायण उरांव मौजूद थे।

कहा कि यह सेमिनार छात्रों को ग्रामीण अनेवाली चुनौतियों का समाधान करने और आदिवासी समुदायों के सामने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रदान करेगा।

PRESS : DAINIK BHASKAR

आदिवासी समुदाय की विरासत को मिल रहा बढ़ावा

बोले डॉ जोसफ

रांची, विशेष संवाददाता। जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएस एस), रांची के डॉ केएस सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च और प्लानिंग विभाग, रुरल मैनेजमेंट विभाग की ओर से सोमवार को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुरुआत हुई।

इसका विषय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन: सांस्कृतिक अनुकूलन व कहानी कहने की कला: आदिवासी साहित्य का निर्माण है'। संगोष्ठी की शुरुआत करते हुए एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर ने कहा कि एक्सआईएसएस, ओने



एक्सआईएसएस में सोमवार को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत हुई।

ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च और प्लानिंग विभाग और रुरल मैनेजमेंट विभाग के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत उल्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है। यह देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी विकालत करने के लिए हमारे

समर्पण का प्रतीक है। कहा, इस संगोष्ठी में आदिवासी साहित्य के निर्माण में योगदान देने वाले समृद्ध सांस्कृतिक अनुकूलन व कहानी कहने की परंपराओं पर चर्चा होगी, जो विद्वानों और शोधकर्ताओं को इन विषयों को गहराई से जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

जवाहरलाल नेहरू विवि, दिल्ली में शोधार्थी व यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता मैरी गिरार्ड ने कहा कि रोहतासगढ़ का फिर से दौरा करके, हमारा उद्देश्य न सिर्फ कहानी कहने की परंपराओं का सम्मान करना है, बल्कि आदिवासी साहित्य की गतिशील प्रकृति व सामूहिक पहचान को आकार देने में इसके महत्व को बताना भी है।

PRESS : HINDUSTAN

आदिवासी संस्कृति व विविधता को प्रकाश में लाना होगा : मेरी



एक्सआइएसएस

रांची. एक्सआइएसएस में सोमवार को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत हुई. इसका विषय रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन : सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कला, आदिवासी साहित्य का निर्माण था. इस पर विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये. डॉ केएस सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एंड प्लानिंग डिपार्टमेंट और रूरल मैनेजमेंट व जेएनयू ने इसमें सहयोग किया. इस मौके पर यूएस फुलब्राइट व जेएनयू की रिसर्च मेरी जिराई बतौर अतिथि वक्ता पहुंचीं. उन्होंने कहा कि आदिवासी संस्कृति की समृद्धि और विविधता को प्रकाश में लाने की जरूरत है. रोहतासगढ़ का दौरा कर इस उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है. इससे आदिवासी समाज के बदलाव की

कहानी दोबारा लिखी जा सकेगी. इसमें समय के साथ कैसे परंपराएं बदली हैं और जीवनशैली में क्या बदलाव हुआ है, इसका आकलन किया जा सकेगा. वहीं, एक्सआइएसएस के निदेशक डॉ जोसेफ मरियानूस कुजूर एसजे ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज लगातार आगे बढ़ रहा है. इसके बाद भी ग्रामीण क्षेत्र के आदिवासी सामाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं. शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने की जरूरत है. इससे आदिवासी समाज में सकारात्मक विकास होगा. मौके पर संस्था के डीन एकेडमिक्स डॉ अमर एरोन तिग्गा, डॉ अनंत कुमार, डॉ संत कुमार, डॉ भुवनेश्वर सवैयां, डॉ अभ्य सागर मिंज, रोशन एक्का, डॉ नीलम केरकेट्टा, कीर्ति मिंज, ऑगस्टीन केरकेट्टा, मोनिका टोणो और पूनम टोपनो सहित अन्य मौजूद थे.



जल्द आ रहा है आपका
नया अखबार



एक्सआईएसएस में आदिवासी साहित्य निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

यूटिलिटी

 June 17, 2024  Social News Search

 Leave A Comment

रांची : जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने अपने डॉ के.एस. सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रुरल मैनेजमेंट कार्यक्रम तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता सुश्री मैरी गिरार्ड के साथ मिलकर सोमवार को संस्थान के फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस.जे. ऑडिटोरियम में दो-दिवसीय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन': सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कला: आदिवासी साहित्य का निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया.

यह संगोष्ठी आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई. क्योंकि इसने संस्कृति, अनुकूलन और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई.

इस संगोष्ठी का स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया और कहा, “एक्सआईएसएस, रांची ओने ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रुरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर बहुत गर्व करता है। संस्थान में स्थित इस सेंटर से शैक्षणिक उत्कृष्टता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है और देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी वकालत करने के लिए हमारे समर्पण का प्रतीक है। साथ ही हमारा रुरल मैनेजमेंट कार्यक्रम छात्रों को ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यावहारिक कौशल और अंतर्दृष्टि से लैस करके इन प्रयासों को और आगे बढ़ाता है, यह सुनिश्चित करता है कि हमारे संस्थान से निकले हुए मैनेजर सकारात्मक बदलाव के उत्प्रेरक हों।”

उन्होंने आगे कहा कि, यह सेमिनार आदिवासी साहित्य के निर्माण में योगदान देने वाले समृद्ध सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की परंपराओं पर चर्चा करता है, जो विद्वानों और शोधकर्ताओं को इन विषयों को गहराई से जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगा. संस्थान विद्वानों और हितधारकों को भारत के आदिवासी समुदायों के लिए अधिक न्यायसंगत और सशक्त भविष्य की दिशा में इस परिवर्तनकारी यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है।"

"आदिवासी संस्कृतियों की समृद्धि और विविधता का जश्न मनाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है," ये बातें जेएनयू में रिसर्चर और यूएस फुलब्राइट-नेहरु शोधकर्ता और कार्यक्रम की आयोजक मैरी गिरार्ड ने कहा। उन्होंने कहा, "रोहतासगढ़ का फिर से दौरा करके, हमारा उद्देश्य न केवल कहानी कहने की परंपराओं का सम्मान करना है, बल्कि आदिवासी साहित्य की गतिशील प्रकृति और सामूहिक पहचान को आकार देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालना भी है।"

सेमिनार के दौरान, रोहतासगढ़ पर विस्तार से चर्चा की गई और इसे इतिहास और लोककथाओं में समाहित स्थान बताया गया। अंतःविषय दृष्टिकोण के माध्यम से, प्रतिभागियों ने आदिवासी साहित्य की गहराई में जाकर आख्यानों, मिथकों और मौखिक परंपराओं की परतों को उजागर किया, जिन्होंने भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दिया है। सेमिनार में आदिवासी अध्ययन के क्षेत्र में प्रसिद्ध विद्वानों और शोधकर्ताओं द्वारा आकर्षक चर्चाएं और प्रस्तुतियां दी गईं। अन्वेषण के विषयों में आदिवासी साहित्य का विकास, समकालीन संदर्भों में इसका अनुकूलन और सांस्कृतिक पहचान और लचीलेपन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका शामिल थी। पैनल के विषय थे रोहतासगढ़ का दौरा: किला और गांव, इतिहास का विरोधाभासः मौखिक बनाम अकादमिकः हमारी पद्धति का वित्तपनिवेशीकरण, उरांव प्रवास का इतिहास, आदिवासी प्रवास पर साहित्य का ऐतिहासिक अवलोकन छोटानागपुर, पलायन की कहानीः उरांव के नजरिए से, मौखिकता और आदिवासी पहचान और एजेंसी, तथा लोक कथाओं का संकलनः साहित्य और मौखिक अभिलेखागार।

PRESS : SOCIAL NEWS SEARCH

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

पंच संवाददाता

रांची। जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने अपने डॉ के.एस. सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली में यूएस फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता मैरी गिराई के साथ मिलकर सोमवार को संस्थान के फादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एस.जे. ऑडिटोरियम में दो-दिवसीय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन': सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहने की कला: आदिवासी साहित्य का निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय



संगोष्ठी का आयोजन किया। यह जिसमें उहोने कार्यशाला में सभी संगोष्ठी आदिवासी संस्कृतियों और उनकी साहित्यिक विरासत की खोज में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। क्योंकि इसने संस्कृति, अनुकूलन और कहानी कहने के बीच जटिल संबंधों पर गहन चर्चा हुई। इस संगोष्ठी का स्वागत नोट एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे द्वारा दिया गया,

जिसमें उहोने कार्यशाला में सभी का स्वागत किया और कहा, एक्सआईएसएस, रांची ओने ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, रिसर्च एवं प्लानिंग विभाग और रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के माध्यम से भारत के आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर बहुत गर्व करता है। संस्थान में स्थित इस

सेंटर से शैक्षणिक उक्तिता को सामाजिक प्रभाव से जोड़ने के उद्देश्य को बढ़ावा मिलता है और देश भर में आदिवासी आबादी के अधिकारों और विकास को समझने और उनकी वकालत करने के लिए हमारे समर्पण का प्रतीक है। साथ ही हमारा रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम छात्रों को ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यावहारिक कौशल और अंतर्राष्ट्रीय से लैस करके इन प्रयासों को और आगे बढ़ाता है, यह सुनिश्चित करता है कि हमारे संस्थान से निकले हुए मैनेजर सकारात्मक बदलाव के उत्प्रेरक हों।

PRESS : PUNCH

एक्सआईएसएस में 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन' पर आदिवासी साहित्य निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रॉफेसर फाइटर संवाददाता
रंगीनी : जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रंगीनी ने अपने में एक महत्वपूर्ण मौल का पत्रपत्र डॉ के.एस. सिंह द्वायबल रिसोर्स संगोष्ठी आदिवासी संस्कृतियों और उनकी सांस्कृतिक विरासत की सोनोज (एक्सआईएसएस) में एक महत्वपूर्ण मौल का पत्रपत्र डॉ के.एस. सिंह द्वायबल रिसोर्स संगोष्ठी आदिवासी संस्कृति, सेंटर, रिसच एवं ज्ञानिंग विभाग अनुकूलन और कहानी कानून के बीच जटिल संबंधों पर जान चर्चा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय हुई। इस संगोष्ठी का स्वभावत गोट (जैपनव), दिल्ली में यूसु एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता सुश्री मीरी मिशार्ड के साथ मिलकर सोमवार को संस्थान के फाफर माइकल वैन डेन बोगट एस.जे. एक्सआईएसएस, रंगीनी और द्वायबल रिसोर्स सेंटर, रिसच एवं ज्ञानिंग विभाग और कर्तल नेहरू एसजे डाय दिवा एवं जिसमें उन्होंने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया और कहा, प्रतिबहुता पर बहुत चर्चा करता है।
अंडिरोटीयम में दो-दिवसीय 'रोहतासगढ़ का पुनरावलोकन': संस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कार्यक्रम के माध्यम से भारत के कहाने की कला: आदिवासी साहित्य का निर्माण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। वह और संरीक्षित करने की अपनी



उनकी वकालत करने के लिए हमारे संस्थान में स्थित है। साथ ही हमारे शैक्षणिक उक्तकाला को समाजिक रूप से जारीने के उद्देश्य को बढ़ावा दिलता है और देश भर में आदिवासी समुदायों की समृद्धि आदिवासी जागादी के अधिकारों और विकास को समर्झन और अविरोध से सैस करके इन प्रथमों को और आये बढ़ाता है, वह सुनाहित करता है जिसमें संस्थान से निकले हुए मैनेजर डायमीण और आदिवासी समुदायों के समन्वय आने वाली चुनौतियों का सम्बाधन करने के लिए व्यावहारिक सेवानार आदिवासी साहित्य के विषय पर आयोजक मैरी मिशार्ड और विकास करके इन प्रथमों को और आये बढ़ाता है, वह सुनाहित करता है जिसमें संस्थान से निकले हुए मैनेजर सकारात्मक बदलाव के उत्तरकालीन आने वाली चुनौतियों का सम्बाधन आने वाली चुनौतियों का होता है। उन्होंने आगे कहा कि, वह फुलब्राइट-नेहरू शोधकर्ता और परतों को उजागर किया, जिसमें कार्यक्रम की आयोजक मैरी मिशार्ड भारत के संस्कृतिक परिवेषकों द्वायबल को आयोजन करने के लिए आग्रहित करता है।

सांस्कृतिक अनुकूलन और कहानी कहाने की परिपाराओं पर चर्चा करता है, जो विद्वानों और शोधकर्ताओं को एपरेटरों का सम्मान करना है, इन विषयों को गहराई से जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। संस्थान के आदिवासी समुदायों के लिए भारत के आदिवासी समुदायों के लिए अधिक न्यायसंगत और सशक्त भविष्य वाली दिशा में इस परिवर्तनकारी वाजा में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता है। अंतर्राष्ट्रीय संस्कृतियों की समृद्धि अंतर्राष्ट्रीय हाईकोर्ट के माध्यम से, अंतर्राष्ट्रीय हाईकोर्ट का जनन बनाने का प्रतिभागियों ने आदिवासी साहित्य की गहराई में जाकर आखियानों, मिथकों और मौखिक परंपराओं की परतों को उजागर किया, जिसमें कार्यक्रम की आयोजक मैरी मिशार्ड आगर देने वाले समृद्धि का फिर से दौरा करके, हमारा उद्देश्य न केवल कहानी कहाने की परिपाराओं का सम्मान करना है, बल्कि आदिवासी साहित्य की गतिशील प्रकृति और सामूहिक पहचान जो आकाश देने में इसके महत्व पर प्रकाश ढालना भी है। सैमिनान के द्वारा, रोहतासगढ़ पर वितर से चर्चा की गई और इसे इतिहास और लोककथाओं में समाहित स्थान बताया गया। अंतर्राष्ट्रीय हाईकोर्ट के माध्यम से, अंतर्राष्ट्रीय हाईकोर्ट का जनन बनाने का प्रतिभागियों ने आदिवासी साहित्य की गहराई में जाकर आखियानों, मिथकों और मौखिक परंपराओं की परतों को उजागर किया, जिसमें कार्यक्रम की आयोजक मैरी मिशार्ड भारत के संस्कृतिक परिवेषकों द्वायबल को आयोजन कहा, इतिहासगढ़ आकाश दिया है।

PRESS : FREEDOM FIGHTER